केरल विशेषांक

अनुक्रमणिका ✻ Contents

जिल्द 35, सं. 2 • Vol. XXXV, No. 2

प्रकाशन तिथि : 14 अगस्त, 2013

महाप्रबंधक (प्रभारी)
ए. के. ठाकुर
General Manager
(In-charge)
A. K. Thakur

संपादक
डॉ. नीरा प्रसाद
Editor
Dr. Neera Prasad

सम्पादकीय सलाहकार
वी. जे. म्हात्रे
एस. आफताब
मयंक मेहता
अरुण श्रीवास्तव
Editorial Advisors
V. J. Mhatre
S. Aftab
Mayank Mehta
Arun Srivastava

अगला आकर्षण
वित्तीय समावेशन विशेषांक

Edited and published by Dr. Neera Prasad for Union Bank of India, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.
E-mail: neeraprasad@unionbankofindia.com

Our Address : Editor, Union Dhara, 11th Floor, Union Bank Bhavan, 239, Vidhan Bhavan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.
E-mail: uniondhara@unionbankofindia.com
Tel.: 22020853 / 22896547 / 22896548

यूनियन धारा UNION DHARA

जून, 2013 June, 2013

New Directors / स्टार यूनियन दाई इची 4
Exploring Kerala 6
केरल 7
भारतीयता का त्रिवेणी संगम : मलयालम 8
नेहरु ट्रॉफी - नौका रेस 9
Kerala God's Own Country 10
मलयालम साहित्य 12
कोच्चि में बढ़ते राजभाषा के कदम 13
About Kannur 14
केरल : परशुराम क्षेत्रम 15
संस्कृतियों का सेतु केरल 16
Kerala - A Journey to Success / Kerala Model of Development 17
तिरुओणम 18
कोलम / Floral Carpet 19
God's Own Destination 20
Spices in Kerala 22
Mineral Resources / खेल जगत से 23
भगवान का अपना प्यारा-सा घर 24
श्री श्री आदि शंकराचार्य 25
Backwaters / देवों की पर्व भूमि 26
Sabarimala / Sree Narayana Guru 27
Payyoli Express 28
Kerala On the Top / Temples of Thiruvananthapuram 29
My Maiden Experience 30
कुदरत की मार 31
Malayalam in Cyber World / Media in Kerala 32
नृत्य-नाट्य का शिरोमणि - कथकलि 33
Kalaripayattu / "THEYYAM" 34
Ayurveda 35
Bekal Fort / Pandalam 36
सेंट अल्फोंसा / St. Thomas 37
Tryst with History 38
Vaikom / Mirror of Prosperity 39
शिखर की ओर 40
मुन्नार - दक्षिण भारत का अद्भुत स्वर्ग 42
साहित्य जगत से 44
नया क्या है? 46
शुभमस्तु 47
Guruvayur Temple 48
Elephants 49
Ravi Varma / Citadel of Cartoonists / वर्गीज कुरियन / मलमपुजा 50
Kottakkal Arya Vaidya Sala 51
Sree Padmanabha Swamy Temple 52
Yes, They are from Kerala 53
Santhigiri Ashramam / Sree Muthappan 54
Some Facts & Figures / Periyar National Park 55
Idukki & Kottayam – At a Glance 56
Our Esteemed Customers 58
Babus / Path of Achievement / Kozhikode (Calicut) 59
Meaningful FI – Ernakulam 60
संस्मरण / Beypore / बड़े बाबू 61
Mohiniyattam / Of Owning and Owner 62
बधाई 63
हमें गर्व है 65
पुरस्कार एवं सम्मान 66
वार्षिक प्रतियोगिताएं 68
From Retirees' Desk 70
समाचार दर्शन 72
Face in the Union Bank Crowd 80
हेल्थ टिप्स / रुचिकर व्यंजन 82

इस पत्रिका में व्यक्त विचारों से प्रबंधन का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

ABCI

Designed and Printed at MAGNA GRAPHICS (INDIA) LTD., 101- C&D, Govt. Industrial Estate, Kandivli (West), Mumbai - 400 067. Tel.: 67241234

केरल के कर्मठ हिन्दी सेवी

डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर

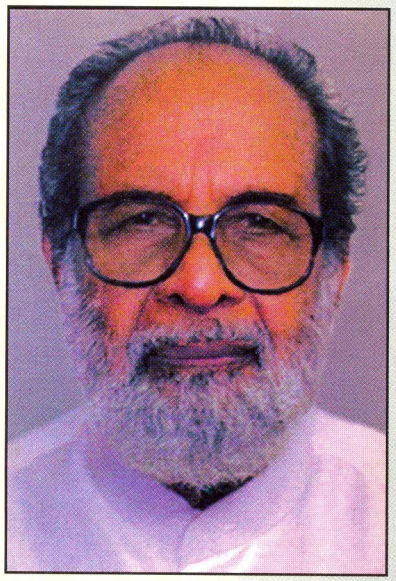

हिन्दीतर प्रदेशों विशेषतया केरल राज्य के हिन्दी विद्वानों और साहित्यकारों में डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर का नाम अग्रणी है. लगभग 72 वर्षों से डॉ. नायर विभिन्न प्रकार से हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति की लगातार सेवा करते हुए उसे समृद्ध बनाने में अपना बहुमूल्य योगदान देते आ रहे हैं. आज लगभग 90 वर्ष की आयु में भी आप कर्मठ हिन्दी सेवी के रूप में प्रतिष्ठित हैं.

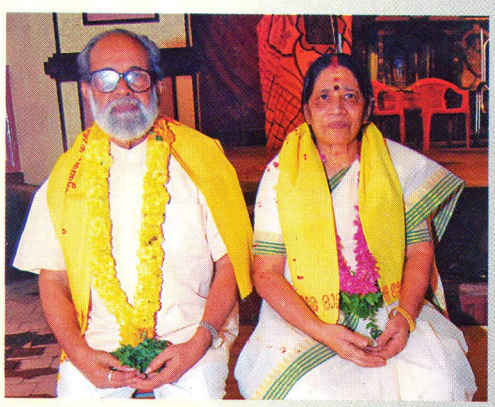

केरल हिन्दी साहित्य अकादमी के संस्थापक, बहुमुखी प्रतिभा के धनी तथा मलयालम, हिन्दी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं के प्रकांड पंडित डॉ. नायर ने हिन्दी भाषा को अपने सृजन-क्षेत्र और कर्म-क्षेत्र के रूप में चुना.

आपका जन्म 27 जून 1924 को केरल के एक साधारण-से नायर परिवार में हुआ. आपके पिता श्री नीलकृष्ण पिल्लै एक मध्यवर्गीय कृषक और माता श्रीमती जानकी अम्मा, एक कुलीन धार्मिक महिला थीं.

डॉ. नायर ने हिन्दी तथा अन्य क्षेत्रों में अनेक उपाधियां अर्जित करने के साथ-साथ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए. और बिहार विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधियां प्राप्त कीं. आपने चित्रकला की परीक्षा भी उत्तीर्ण की है और अच्छे चित्रकार के रूप में जाने जाते हैं. आपके द्वारा निर्मित चित्रों की अनेक प्रदर्शनियां दिल्ली और तिरुवनंतपुरम में लगाई गईं और प्रशंसित तथा पुरस्कृत हुई हैं.

आपने वर्ष 1942 में हिन्दी प्रचारक के रूप में अपनी सेवा-साधना प्रारंभ की. कालांतर में उन्होंने स्कूलों, कॉलेजों में हिन्दी अध्यापन कार्य किया. आप यूजीसी के मेजर रिसर्च फैलो रहे और 1988 से 1989 तक दो वर्ष के लिए एमरेट्स प्रोफेसर भी रहे.

अध्ययन-अध्यापन की लंबी पारी खेलने के साथ-साथ डॉ. नायर ने हिन्दी, मलयालम और अंग्रेजी में विपुल लेखन-कार्य किया. उल्लेखनीय है कि उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं पर साधिकार अपनी लेखनी चलाई. उनकी मौलिक, अनूदित और संपादित कृतियों का संग्रह यदि एक स्थान पर किया जाए तो उनकी रचनाओं का एक बड़ा अंबार लग जाएगा.

डॉ. नायर ने दक्षिण और उत्तर के बीच भाषायी सेतु का निर्माण कर भारतीय संस्कृति को सुदृढ़ता प्रदान करते हुए राष्ट्रीय भावनात्मक एकता का मार्ग प्रशस्त किया है. उनकी रचनाएं किसी विशिष्ट वर्ग के लिए न होकर आम आदमी के लिए हैं. भारतीय पौराणिक-आध्यात्मिक पात्रों को आदर्श के रूप में प्रस्तुत कर सामाजिक सहिष्णुता बनाने और बढ़ाने के लिए सबको प्रेरित किया है. गांधी जी का आदर्श और सुधारवादी दृष्टिकोण भी इनके साहित्य में भरपूर मिलता है.

डॉ. नायर के प्रसिद्ध कथा-संग्रह ''प्रोफेसर और रसोइया'' के संदर्भ में कमलेश्वर ने भी लिखा था कि ''डॉ. नायर की कहानियों के अधिकांश पात्र सुरक्षित फुटपाथों पर घूमने वाले लोग नहीं हैं, अपितु ट्रैफिक के खतरों से जूझकर सड़क पार करने के प्रयत्न में लगे लोग हैं.'' अतः आम आदमी की बेबसी और पीड़ा को स्वर देने वाली रचनाएं डॉ. नायर की प्राथमिकता रही हैं.

अपने ''चिरंजीव'' महाकाव्य में उन्होंने पौराणिक चिरंजीव पात्रों - अश्वत्थामा, हनुमान, व्यासदेव, कृपाचार्य, परशुराम, आदि को उनके प्रसंगों से जोड़कर उनका जीवंत चित्रण किया है.

'केरल के हिंदी साहित्य का इतिहास' के रूप में डॉ. नायर ने एक ऐसा प्रामाणिक दस्तावेज रचा है, जिसमें केरल में हिंदी के प्रसार-प्रचार के व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयासों को क्रमबद्ध तरीके से पिरोया है. यह कृति केरल के लगभग सभी विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित है.

साहित्य की अनेक विधाओं में योगदान देने के कारण उनकी रचनाओं में, विषयों में व्यापक भिन्नता दिखलाई पड़ती है. कविता, नाटक, कहानी, शोध, आलोचना, चित्रकला जैसी सभी विधाओं को उन्होंने समृद्ध किया. एक ओर जयशंकर प्रसाद की तरह भारत की प्राचीन पौराणिक संस्कृति को प्रतिपादित करते हुए उन्होंने रचनाएं लिखी हैं तो वहीं दूसरी ओर मैथिलीशरण गुप्त और दिनकर की तरह देशभक्ति की रचनाएं दी हैं. उन्होंने प्रेमचंद की तरह ग्रामीण अंचल की सोंधी महक से जुड़े आम जन-जीवन पर आधारित सामाजिक सांस्कृतिक चेतना की रचनाएं भी की हैं.

डॉ. नायर ने हिन्दी भाषा और साहित्य की सेवा करनेवाले हिन्दी-सेवी के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की है.

लगभग नब्बे वर्ष की आयु में भी डॉ. नायर का उत्साह किसी भी मायने में कम नहीं हुआ है. वे आज भी केरल हिन्दी साहित्य अकादमी और उसकी शोध पत्रिका के माध्यम से हिन्दी सेवा कार्य में लगे हुए हैं. देश के सात विश्वविद्यालयों में उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर शोध कार्य हो चुके हैं और अभी भी यह क्रम जारी है. लगभग 250 साहित्यकारों द्वारा उनको आधार बनाकर लेख लिखे गये हैं. इनमें से प्रमुख हैं: सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, डॉ. रामकुमार वर्मा, विष्णु प्रभाकर, डॉ. विजयेंद्र स्नातक, डॉ. प्रभाकर माचवे, डॉ. भोलानाथ तिवारी, कमलेश्वर, डॉ. पी. के. नारायण पिल्लै आदि.

डॉ. नायर और उनकी रचनाओं को केंद्रीय सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, शिक्षा संस्थानों, साहित्य अकादमियों और स्वैच्छिक संस्थानों से अनेकों पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं, जिनकी संख्या 50 से भी अधिक है. उनकी पुरस्कृत रचनाएं तथा उन्हें प्राप्त कुछ प्रमुख पुरस्कार एवं सम्मान इस प्रकार हैं :

- प्रोफेसर और रसोइया - कहानी संग्रह - मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
- साहित्य मार्तण्ड - कला-संस्कृति साहित्य विद्यापीठ, मथुरा
- देवयानी (नाटक) - भारत सरकार, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली
- एमिरेटस पर्सनेलिटी ऑफ इंडियन इंटरनेशनल बायोग्राफिक रिसर्च फाउंडेशन ऑफ इंडिया, कोलकाता
- गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान - मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली (एक लाख रुपये नकद की पुरस्कार राशि)
- यूजीसी पुरस्कार - 'हिन्दी - मलयालम के दो प्रतीकवादी कवि' शोध ग्रंथ के लिए
- रजत जयंती सम्मान - गांधी शांति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली
- विद्यासागर सम्मान - विक्रमशिला हिंदी विद्यापीठ, भागलपुर
- राष्ट्रीय हिन्दी सेवा सम्मान - सहस्राब्दि विश्व हिन्दी सम्मेलन, नई दिल्ली

डॉ. नायर 25 से भी अधिक राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक समितियों के कार्यकारी सदस्य रहे हैं. भारत सरकार की राजभाषा नीति के समुचित कार्यान्वयन में भी उन्होंने अपना प्रभावी योगदान दिया. भारत सरकार की अनेक सलाहकार समितियों में उन्हें सदस्य के रूप में शामिल किया गया, जिनमें रेल मंत्रालय, परिवहन और जहाजरानी मंत्रालय, संस्कृति मंत्रालय, श्रम मंत्रालय, नगर विमानन मंत्रालय प्रमुख हैं.

डॉ. नायर की साहित्यिक सेवाओं के सम्मान में विभिन्न संस्थाओं द्वारा अभिनंदन-ग्रंथ प्रकाशित किये गये हैं, उन पर विशेषांक निकाले गये हैं. इन सबसे उनकी सादगी, विनम्रता और साहित्य-साधना में और अधिक गंभीरता परिलक्षित हुई है. यहाँ तक कि मानव संसाधन विकास मंत्रालय से पुरस्कार स्वरूप प्राप्त रुपये एक लाख की राशि उन्होंने तत्क्षण सुनामी पीड़ितों की सहायतार्थ प्रधानमंत्री कोष में दान कर दी.

केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य को डॉ. नायर ने पुष्पित-पल्लवित कर उसे नई दिशा ही नहीं दिखाई, बल्कि संपूर्ण भारतीय संस्कृति और मूल्यों को प्रतिपादित करने वाला अमूल्य साहित्य देश को समर्पित किया है. सहज और सरल जीवन के इस कर्मठ हिन्दी-सेवी की रचनात्मक यात्रा निरंतर हिन्दी भाषा साहित्य को समृद्ध करती रहे. यही 'यूनियन धारा' की शुभकामना है.

डॉ. नीरा प्रसाद
यूनियन धारा, के.का., मुंबई